

कौन प्रलप

↳ आविष्कार - रिंजर कौन

↳ इसे सतलप प्रलप की कही जाता है

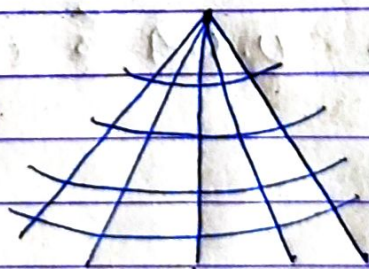
↳ इसमें ध्रुवों के मध्याव शेष सभी अक्षांश रेखाएँ सक्रिय होती हैं जबकि ध्रुव एक बिंदु के रूप में होते हैं।

↳ कैन्ड्रिय या महाभारत रेखा, बराबर रेखा के रूप में होती हैं

जबकि अन्य रेखाएँ वक्राकार होती हैं

↳ सभी अक्षांश वृत्त तथा कैन्ड्रिय रेखा पर आपसी सुदृष्ट होती हैं अन्य रेखाएँ नहीं

अन्य रेखाओं के रेखांतरण
 दिखाएँ जहाँ जहाँ होते
 हैं उनके लिए उपयुक्त नहीं है
 जहाँ - मल्ल, पारिजात, साधनी आदि



सभी अक्षांश पर सुदृष्ट

कैन्ड्रिय रेखा - सुदृष्ट

↳ किसी एक ही गोलार्ध को दर्शाया जाता है

↳ यह ध्रुवीय क्षेत्रों के लिए अधिक उपयुक्त होती है तथा विशेष रूप से मध्य आकार के किरण मानचित्र के किये काम लिया जाता है

जहाँ - फ्रांस, जर्मनी, स्वीडन, आयरलैंड, मेलिसा, बर्जैस

इसके मानचित्रों को बनाते वलु कभीकभी इसका रेखांतरण विचार करते

① कटुशोकीय प्रक्षेप

- इसमें अक्षांश व देशांतर रेखाएँ दोनों के लिए अक्षांश - 2 जगह की जाती हैं
- प्रत्येक अक्षांश रेखा, मानक या मुख्य अक्षांश रेखा के साथ
- सभी अक्षांश बिंदु तथा मध्य देशांतर रेखा पर मापनी शुरू होती है
- शून्यरेखा परी रेखा के रूप में होती है
- जबकि ध्रुवों को एक बिंदु के रूप में दर्शाते हैं।
- यह प्रक्षेप उन देशों के लिए उपयोगी होता है जिनका अक्षांशीय विस्तार अधिक व देशांतरीय विस्तार कम होता है
- विशेष कर यह - U.S.A के व्यापारिक कारोबारों के लिए

अंतराष्ट्रीय प्रक्षेप -

- लॉज - A. पेंक एलबर्ट पेंक - 1881
- इसे मि मीलियन शीट प्रक्षेप की कहते हैं
- R:F \rightarrow 1:1 मीलियन
या 1: एक लाख
1: 10,000,000
- इसे मानचित्र में छोटी शीटों का प्रयोग किया जाता है।

2222 यथा

- इसमें अक्षांशीय वृत्त अक्षैय न होकर सीधी रेखा में होते हैं
- देशांतरिय रेखा की सीधी रेखा में

- यह
- उच्च अक्षांशीय क्षेत्रों के लिए अर्थात् मुख्य रेखा के आसपास के लिए अक्षांशीय x देशांतरिय
विल्ला 4×6

एवं काल्पीय उपकक्षाओं के लिए

4×4
अ. x देश.